बूढ़ा आदमी और बाघ

एल्विन ट्रेसेल्ट

चित्र:

अल्बर्ट एक्विनो

बूढ़ा आदमी और बाघ

एल्विन ट्रेसेल्ट

चित्र: अल्बर्ट एक्विनो
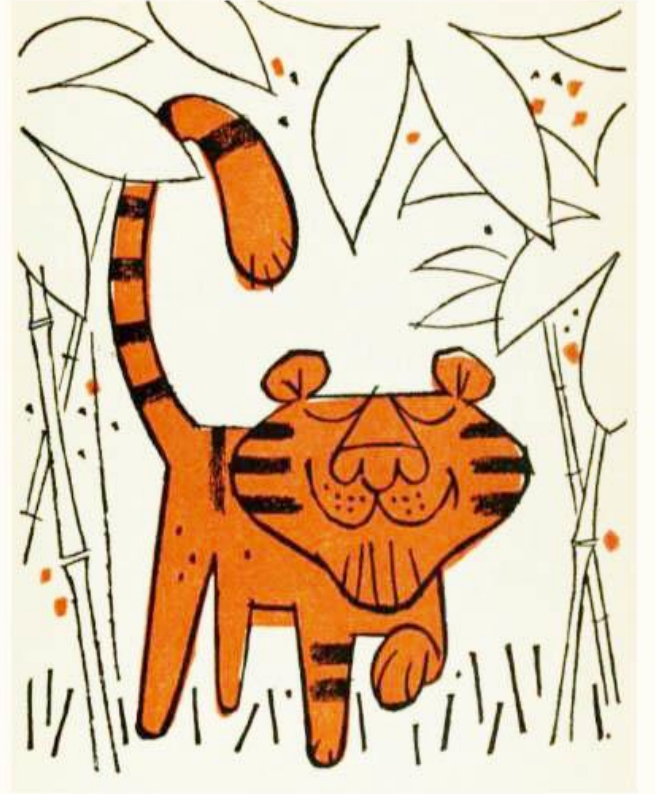
बाघ: (वो पेड़ों के नीचे चल रहा है.)

ज़रा मेरी तरफ देखो!

देखो, मैं एक सुंदर बाघ हूँ!

ज़रा मेरी काली धारियाँ देखो!

मेरी लंबी पूँछ को देखो!

मुझे जोर से सुनो!

जब मैं दहाड़ता हूं

तो हाथी शांत खड़े हो जाते हैं.

जब मैं दहाड़ता हूं तब

बंदर पेड़ों पर शांत बैठ जाते हैं.

(तभी हाथी एक गंध आती है.)

मुझे खाने की कुछ अच्छी खुशबू आ रही है और मैं जल्द ही उसे ढूंढ लूंगा.
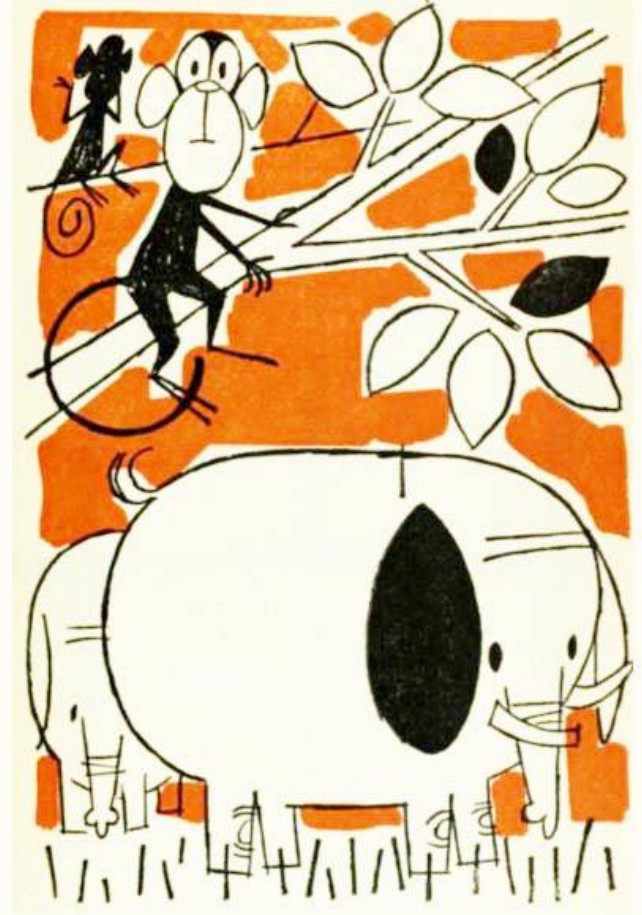
(हाथी एक पिंजरे के पास आता है.

उसके अन्दर कुछ अच्छा है. पिंजरे में अच्छा खाना है.

मूर्ख बाघ पिंजरे में घुस जाता है. **ठक्क!**

वो पिंजरे में फंस जाता है

अब बाघ बाहर नहीं निकल सकता.)

मदद करो! मेरी मदद करो!

क्या कोई मेरी मदद करेगा?
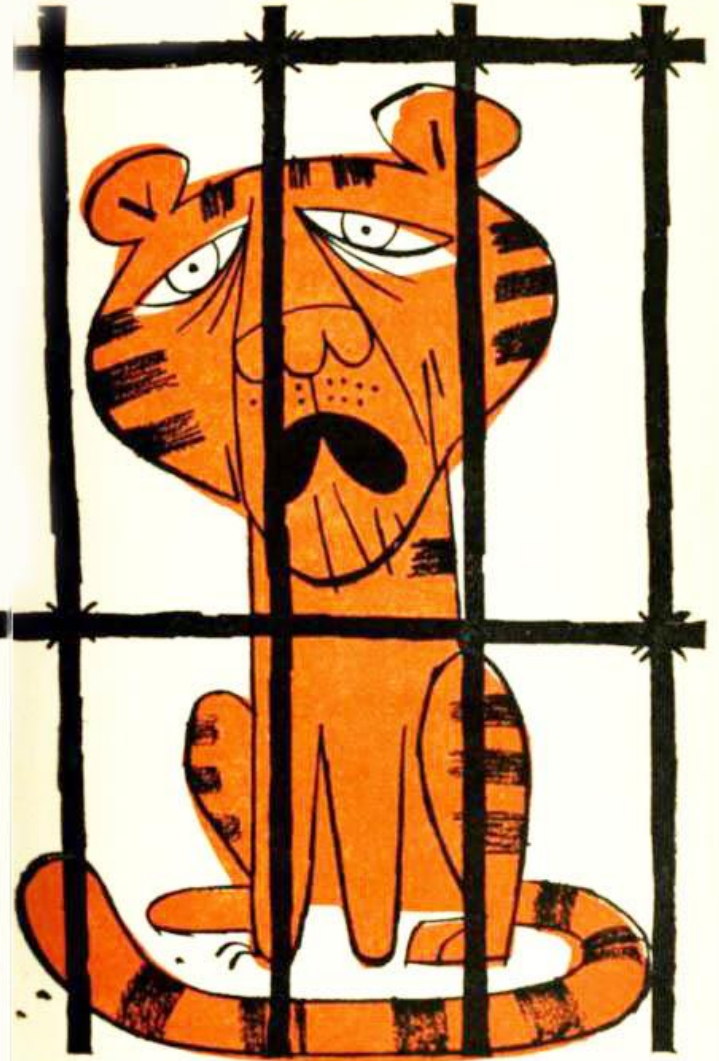
(हाथी उसकी बात सुनते हैं, लेकिन वे स्थिर खड़े रहते हैं. बंदर उसकी बात सुनते हैं, लेकिन वे पेड़ों पर शांत बैठे रहते हैं. तभी एक बूढ़ा आदमी रास्ते पर चलता हुआ आता है.)

बाघ: बूढ़े आदमी! बूढ़े आदमी! ज़रा देखो मैं इस पिंजरे से बाहर नहीं निकल सकता हूं.

बूढ़ा आदमी: वो मैं साफ़ देख सकता हूँ.
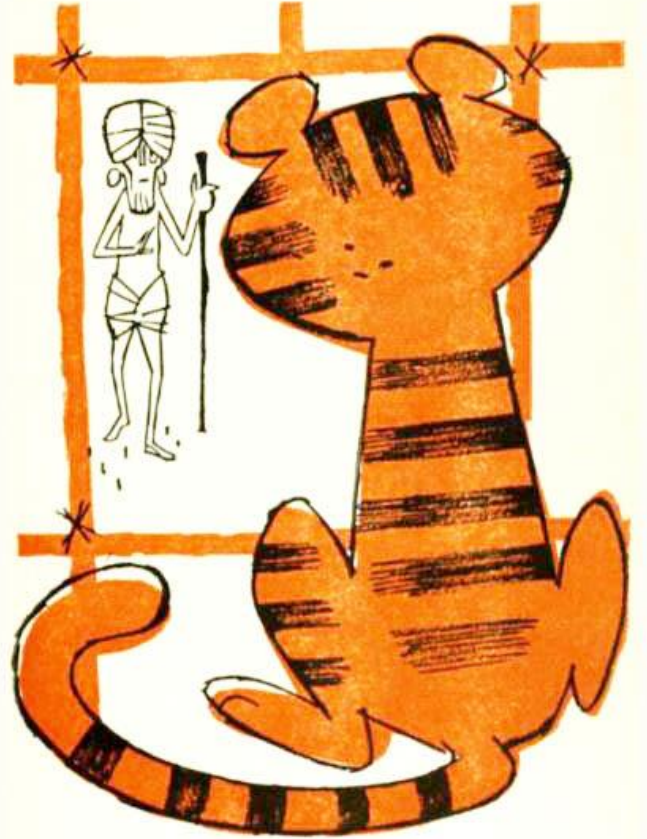
बाघ: क्या तुम मेरी मदद करोगे?

क्या तुम पिंजरे का दरवाज़ा खोलोगे ताकि मैं बाहर निकल सकूँ?

बूढ़ा आदमी: बिल्कुल नहीं! अगर मैंने ऐसा किया तो तुम मुझे खा जाओगे!

बाघ: तुम यह कैसी मूर्खतापूर्ण बात कर रहे हो!

मैं रात का भोजन पहले ही खा चुका हूँ.

बूढ़ा आदमी: तो फिर क्या तुम मुझे खाओगे नहीं?

बाघ: बिल्कुल नहीं, वैसे भी तुम एकदम दुबले-पतले हो.

बूढ़ा आदमी: अच्छा तो फिर मैं पिंजरे का दरवाज़ा खोल दूंगा.

बाघ: अब मैं तुम्हें खा सकता हूँ!
मुझे बहुत भूख लगी है; मैं एक दुबले-पतले बूढ़े आदमी को भी खा सकता हूँ.

बूढ़ा आदमी: लेकिन बाघ, बाघ! तुमने तो कहा था कि तुम मुझे नहीं खाओगे!

बाघ: ओह, मूर्ख बूढ़े आदमी! मुझे खाना चाहिए था तभी तो मैं पिंजरे में घुसा था. अब और ज़्यादा चिल्ल-पों मत करो और मुझे तुम्हें खाने दो.

बूढ़ा आदमी: कृपया, बाघ, कृपया!
मैं सिर्फ एक बात पूछना चाहता हूँ.

बाघ: वो क्या है?

आओ चलो! मुझे बहुत भूख लगी है.

बूढ़ा आदमी: मैं रास्ते पर चलूंगा.

मैं उन पहले तीन लोगों से पूछूंगा जो
मुझे मिलेंगे.

मैं उनसे पूछूंगा,
"क्या बाघ का मुझे खाना सही है?"

यदि वे "हाँ" कहते हैं, तो फिर तुम मुझे
ख़ुशी-ख़ुशी खा सकते हो.

परन्तु यदि उनमें से कोई "न" कहता है,
तो फिर तुम्हें मुझे छोड़ना होगा.

वो अच्छा होगा
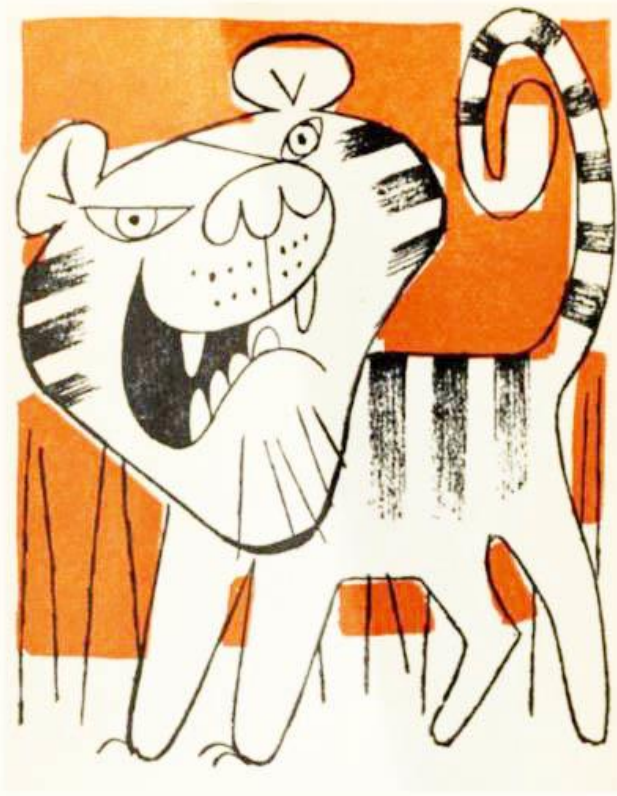
फिर मैं ख़ुशी से अपना खाना खा पाऊं.

बाघ: यह पूछना एकदम मूर्खतापूर्ण होगा.

मैं जानता हूं वे "हां" कहेंगे.

लेकिन फिर भी जाओ. जाओ और उनसे पूछो.

बूढ़ा आदमी: धन्यवाद, बाघ, धन्यवाद.

(बूढ़ा रास्ते पर चलता है.
जल्द ही वह एक बड़े पेड़ के पास आता है.)

अरे पेड़, क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो?

बाघ पिंजरे में फंसा हुआ था.

मैंने उसे पिंजरे से बाहर निकाला.

लेकिन अब वो मुझे खाना चाहता है.

क्या उसका ऐसा करना सही है?

पेड़: बूढ़े आदमी, तुम दुखी मत हो.

जरा मेरी तरफ देखो.

मैंने इंसानों की बहुत मदद की है.
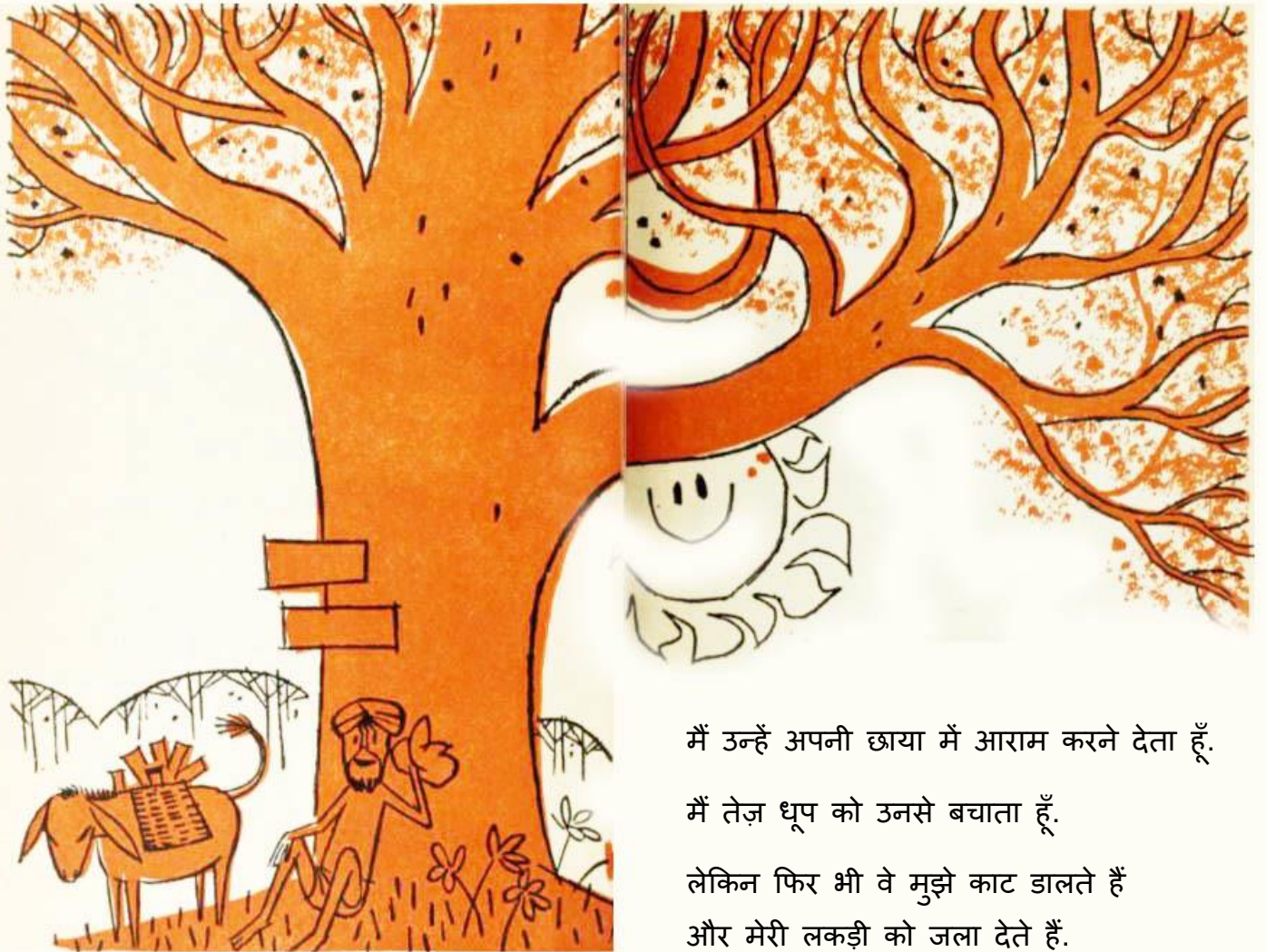
मैं उन्हें अपनी छाया में आराम करने देता हूँ.

मैं तेज़ धूप को उनसे बचाता हूँ.

लेकिन फिर भी वे मुझे काट डालते हैं
और मेरी लकड़ी को जला देते हैं.

जाओ, बूढ़े आदमी. बाघ को तुम्हें खाने दो.

बूढ़ा आदमी: अभी नहीं.

(बूढ़ा रास्ते पर आगे चलता है.
जल्द ही उसे एक बैल दिखाई देता है.)

बैल, बैल, क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो?

बाघ पिंजरे में फंसा हुआ था.

मैंने उसे पिंजरे से बाहर निकाला.

लेकिन अब वो मुझे खाना चाहता है.

क्या उसके लिए ऐसा करना सही है?
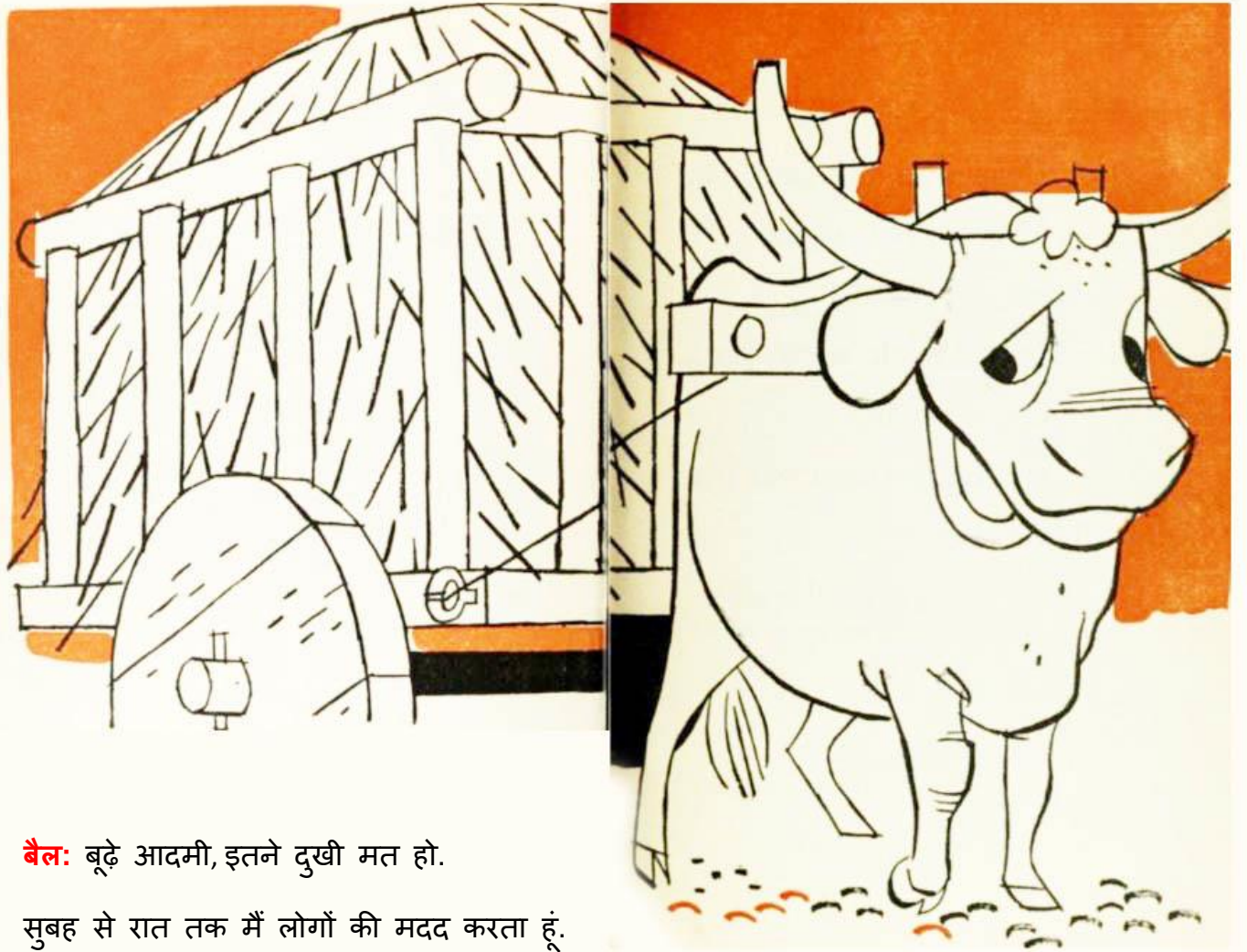
बैल: बूढ़े आदमी, इतने दुखी मत हो.

सुबह से रात तक मैं लोगों की मदद करता हूं.

मैं पूरे दिन उनके लिए काम करता हूं.

लेकिन वे मुझे बिल्कुल आराम करने नहीं देते हैं.

मैं दिन भर काम करता हूँ,

मेहनत करता हूँ, खटता हूँ

जाओ, बूढ़े आदमी,

और बाघ को तुम्हें खाने दो.

बूढ़ा आदमी: अभी नहीं.

(वो रास्ते पर नीचे चलता है.
जल्द ही वो सड़क पर आ जाता है.)

ओह, सड़क, क्या तुम मेरी कुछ मदद कर सकती हो?
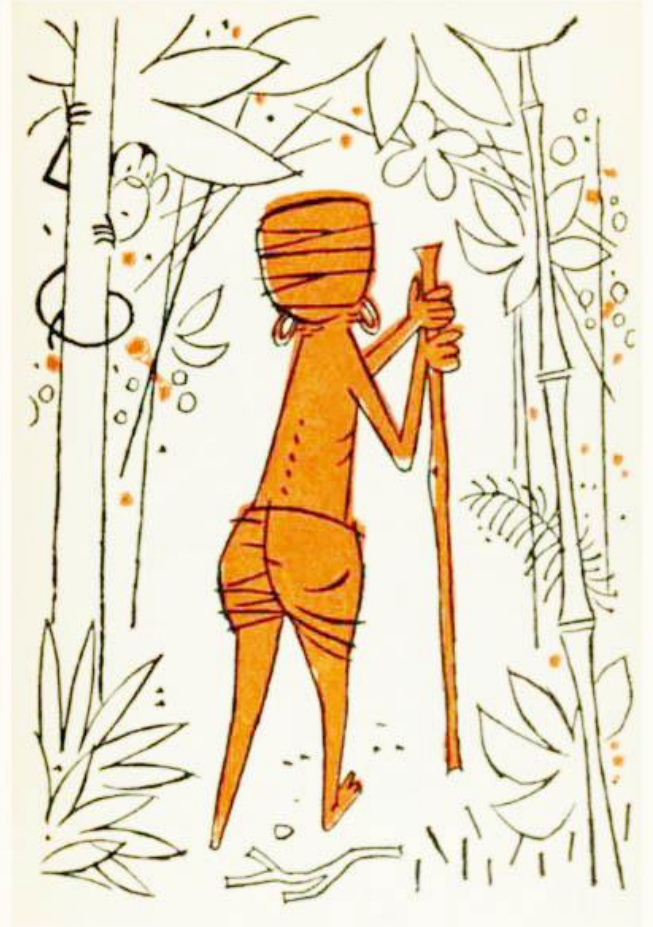
बाघ पिंजरे में फंसा हुआ था.

मैंने उसे पिंजरे से बाहर निकाला.

लेकिन अब वो मुझे खाना चाहता है.

क्या उसके लिए ऐसा करना सही है?

सड़क: बूढ़े आदमी, इतने दुखी मत हो.

ज़रा मेरी तरफ देखो.

मैंने एक रास्ता बनाया था ताकि लोग
मुझ पर चल सकें.

और लोग मेरे लिए क्या करते हैं?

वे मेरे ऊपर से गुजरते हैं, मुझे कुचलते हैं
और वे मुझसे कभी धन्यवाद भी नहीं
कहते हैं.
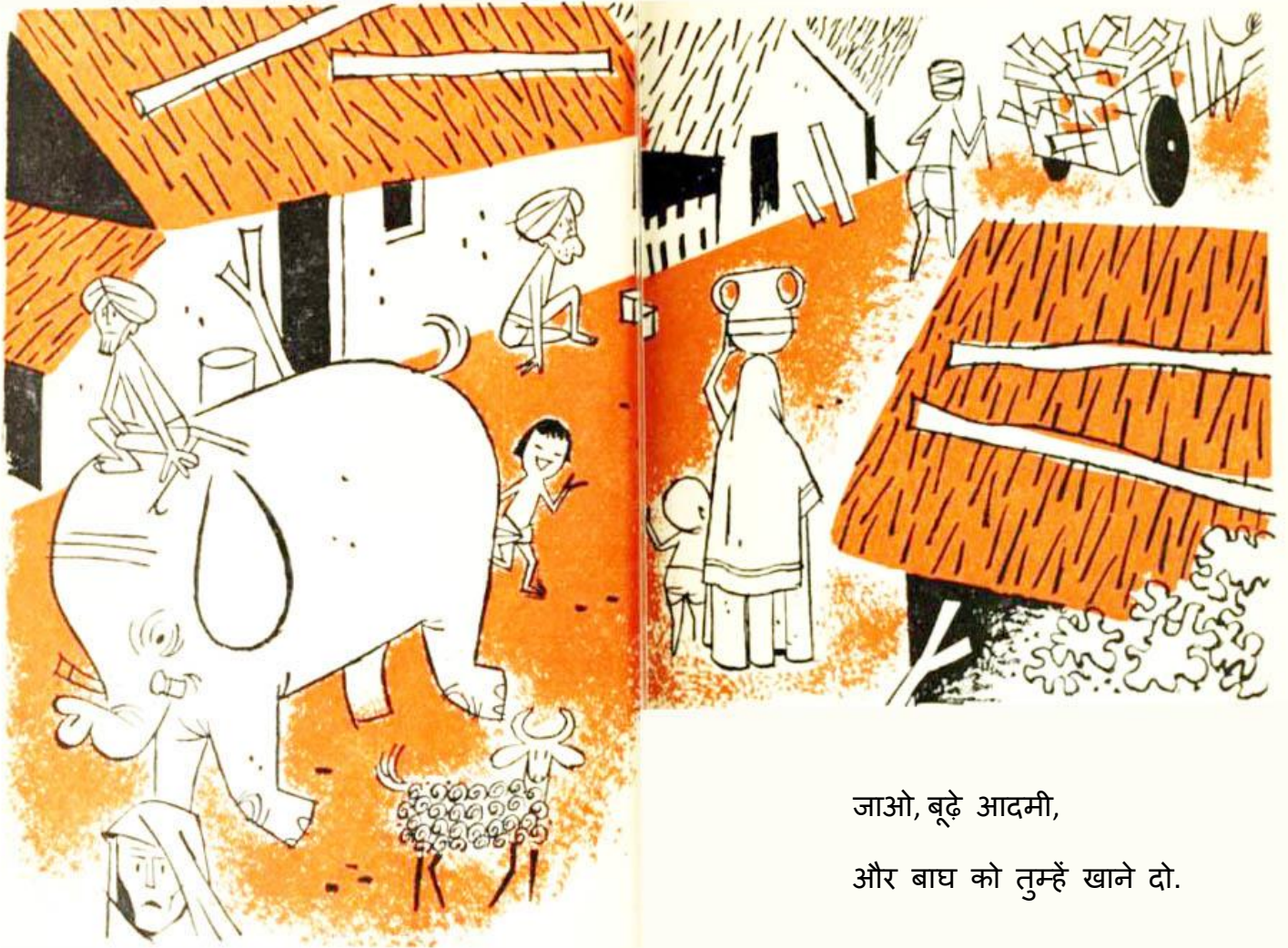
जाओ, बूढ़े आदमी,

और बाघ को तुम्हें खाने दो.

बूढ़ा आदमी: अरे! अब भला मैं क्या करूं!

मदद करने वाला मुझे कोई नहीं मिल रहा है.

अब मुझे जाना चाहिए और बाघ को मुझे खाने देना चाहिए.

(तभी बूढ़े को एक लोमड़ी मिलती है.)

लोमड़ी: तुम बहुत दुखी लग रहे हैं, बूढ़े आदमी.

बाघ पिंजरे में फंसा हुआ था.

मैंने उसे पिंजरे से बाहर निकाला.

लेकिन अब वो मुझे खाना चाहता है.

पेड़

बैल

और सड़क

सभी कहते हैं बाघ को मुझे खाना चाहिए.

लोमड़ी: मैं तुम्हारी बात ठीक से नहीं समझी.

सब कुछ गड्डमगड हो गया है.

मुझे अपने साथ आने दो

मैं खुद बाघ से उसकी

पूरी कहानी सुनाने को कहूँगी.

(फिर लोमड़ी, बूढ़े आदमी के साथ बाघ के पास जाती है.)

बाघ: अच्छा, तुम वहाँ हो!

आओ, जल्दी आओ बूढ़े आदमी,

मुझे अपना रात का भोजन चाहिए!

बूढ़ा आदमी: मैं जल्द ही आऊंगा बाघ.

लेकिन ये लोमड़ी तुमसे

कुछ पूछना चाहती है.

लोमड़ी: मुझे बूढ़े आदमी की पूरी बात समझ में नहीं आई.

मैं बड़ी उलझन में हूं.

अब बाघ तुम ही मुझे अपनी कहानी सुनाओ?

बाघ: बताने को कुछ ख़ास नहीं है.

मैं पिंजरे में फंस गया था.

लोमड़ी: क्या यही वो पिंजरा था?

बाघ: हाँ. क्या तुम उसे नहीं देख सकतीं?

फिर यह बूढ़ा आदमी आया.

और उसने मेरी मदद की.
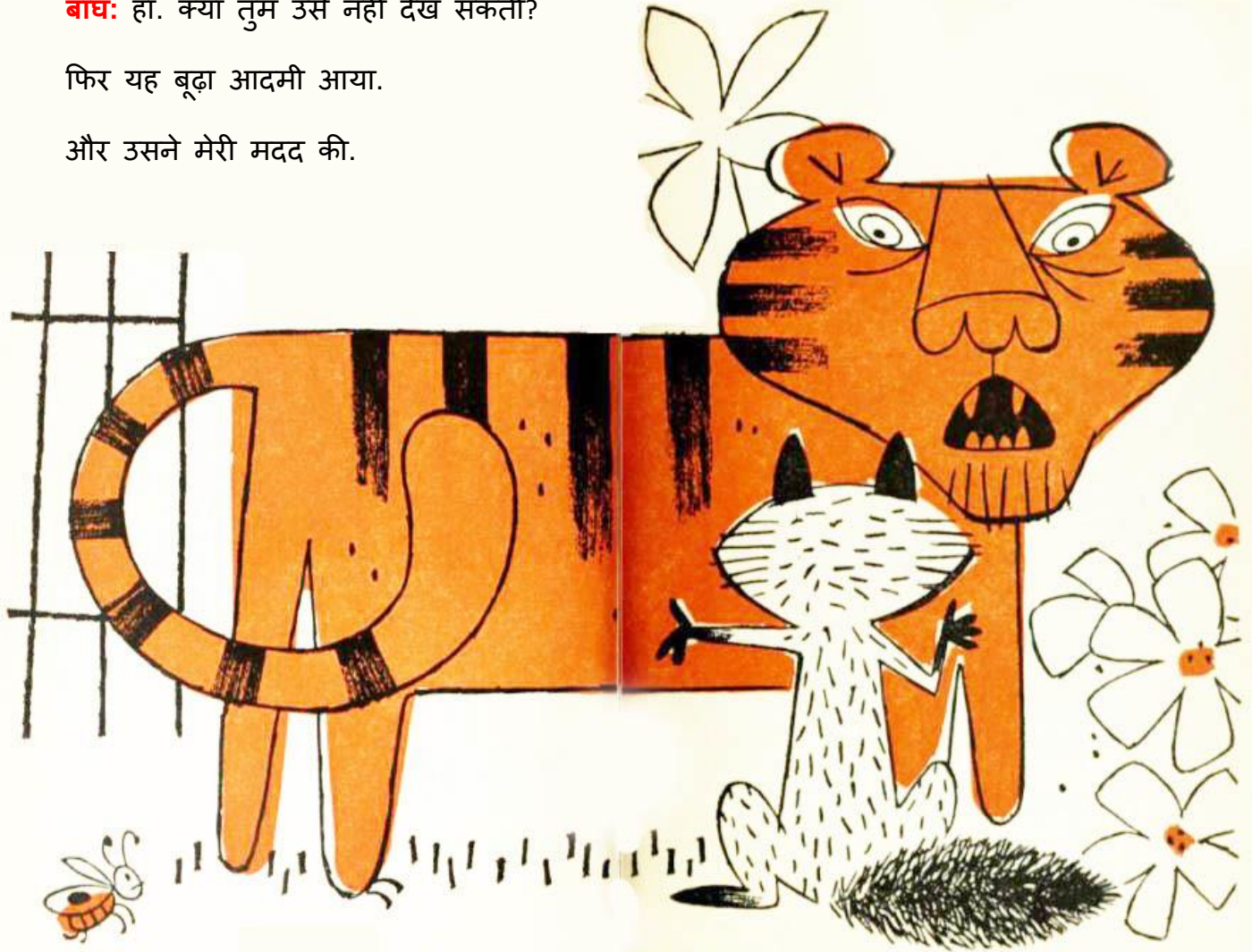
लोमड़ी: और उसने तुम्हारी मदद के लिए क्या किया?

बाघ: उसने मुझे पिंजरे से बाहर निकाला.

लोमड़ी: और अब तुम उस बूढ़े को धन्यवाद देना चाहते हो?

बाघ: मैं उसे खाकर उसका धन्यवाद देना चाहता हूँ. देखो, मुझे बहुत भूख लगी है.

लोमड़ी: लेकिन मुझे अभी भी पूरी बात समझ में नहीं आई.

मैं अभी भी उलझन में हूँ. यह बताओ:

क्या बूढ़ा आदमी पिंजरे के अंदर था.

फिर बाघ तुमने उसे खाने के लिए
पिंजरे से बाहर निकाला.

और अब बूढ़ा तुमसे धन्यवाद नहीं
कहना चाहता है.

बाघ: नहीं, नहीं! बूढ़ा नहीं,

मैं पिंजरे में अंदर था! देखो—इस तरह!

(बाघ वापस पिंजरे में कूद जाता है.

तभी लोमड़ी ने झट से पिंजरे का दरवाजा बंद कर दिया.)

लोमड़ी: अच्छा, अब मुझे तुम्हारी बात समझ में आई!

बाघ: मैं पिंजरे में बंद था.

फिर बूढ़े ने मुझे पिंजरे से बाहर निकाला.

(बूढ़ा आदमी एकदम स्थिर खड़ा रहा.)

आओ, बूढ़े आदमी!

मुझे जल्दी से बाहर निकालो!

(बूढ़ा व्यक्ति स्थिर खड़ा रहा.
फिर वो हंसने लगा.)

बाघ: बूढ़े आदमी!

मुझे अभी बाहर निकालो!

बूढ़ा आदमी! (वो अभी भी हंस रहा था.)

लोमड़ी, मैं सब देख रहा हूँ!

अब मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ!

लोमड़ी: मुझे यह करने में खुशी हुई, बूढ़े आदमी.

आज रात, तुम और मैं चैन की नींद सोएंगे.

(फिर बूढ़ा आदमी और लोमड़ी
सड़क पर आगे बढ़ जाते हैं.)

बाघ: मुझे बाहर निकालो!

मुझे बाहर निकालो!

मदद करो! मेरी मदद करो!

(इस बार हाथी स्थिर नहीं खड़े रहे.
और बंदरों ने पेड़ों पर बातें करना
और खेलना बंद नहीं किया.)

बाघ: क्या कोई मेरे मदद नहीं करेगा

एक बेचारे भूखे बाघ की?